रमचरना

इंदुशेखर

रामचरना

इन्दुशेखर

अनगिनत पगडंडियाँ गर्भस्थ

मंजिलों के पार मंजिल

और उनके पार हैं फिर

अनगिनत पगडंडियाँ गर्भस्थ

राहगीरों को रही जो टेर

बेतरह उलझी हुई इन झाड़ियों को

अहं से ऐंठे हुए इन कंटकों को

रौंद डालो,

या जला डालो उफनते रक्त के उत्ताप से

बने मग पर वे चले जिनके नहीं थे पाँव

मिल गयी छाया जहाँ, वे रुक गये उस ठाँव।

- इन्दुशेखर

एक

दाना – पानी

लहक रही थी धूप आग सी

और उसे थी हवा दे रही हू-हू करती पागल पछुआ।

संपत के चोखड़ा बैठका में जा सुग्गन

बैठ गया खाली चौकी पर

उबियाया-सा।

बड़ी देर तक रहा देखता

संपत का चितकबरा कुतवा

हाँफ रहा था जीभ काढ़कर

टपक रही थी लेर टपा-टप।

धीरे धीरे जाता हुआ सड़क से लखिया

सुग्गन को पड़ गया दिखायी

(भोला भाला, कोरा कागज-सा वह लड़का)

उसे बुलाया,

लखिया आकर बैठ गया तो

खैनी की डिब्बी निकाल कर

सुग्गन ने लखिया से पूछा -

"तुम तो टीकापट्टी में ले रहे टरेनी,

रहते हो तुम वहाँ जहाँ पर

कैसे लगा जुगाड़ तुम्हारा?"

सरल भाव से लखिया बोला -

पहले तो मैं घर से हो आता जाता था

सायकील से।

टीकापट्टी में था बुधवा सायाकिल-फीटर

एक रोज मुझसे वह बोला -

'मास्टर साहब,

रोज-रोज सायकिल से आना

रोज -रोज सायकिल से जाना

बीस मैल डेली का चक्कर

बहुत बुरा है हेल्थ के लिए।

यहीं कहीं पर जुगुत लगा दें